शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

बदलते परिवेश में जनसंचार की विभिन्न रूपों में अहम भूमिका

डॉ० जीत सिं
स.प्रो. एवं विभागाध्य
राजकीय महिला (पी.जी) महाविद्यालय
कांधला (शामली

शोध सारांश

वर्तमान युग सूचना क्रान्ति का प्रगतिशील युग है। जब युग बदलता है तब उसके आदर्श बदलते हैं, उसके मूल्य बदलते हैं, उसकी जीवन पद्धति बदलती है और ये सारे बदलाव युग की आवश्यकताओं के परिपेक्ष्य में होते हैं। सत्य तो यह है कि मानदण्ड और स्वरूप कभी स्थिर नहीं रहते अपितु युग की गति के साथ वे भी गतिमान रहते हैं।

पत्र-पत्रिकायें, रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल तो सूचना क्रान्ति के सफल और सशक्त माध्यम थे ही परन्तु आज न्यू मीडिया भी सशक्त साधन संचालित हैं।

-सम्पादक

आज जनसंचार मानव जीवन की दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। कल्पना कीजिए, एक दिन यदि समाचार-पत्र, रोडियो, टी.वी. चैनल, इण्टरनेट सब बंद हो जाये तो ऐसा लगेगा मानो पूरी दुनिया थम-सी गई हो। जीवन में कुछ बचा ही नहीं। खालीपन-सा लगता है। समय भी नहीं कटता। व्यक्ति अपने आपको अकेला, तन्हा तथा लाचार-सा महसूस करता है। मनुष्य जिस प्रकार समूह में रहने का आदि हो गया है, उतना ही अब जनसंचार माध्यमों का आदी हो गया हैं। चाहे वह पढ़ा-लिखा वर्ग हो या अशिक्षित युवक हो या वृद्ध, महिला हो या पुरुष, यहाँ तक कि बच्चे भी मीडिया के दीवाने बन चुके हैं, यह भी कहा जा सकता है कि सब मीडिया के आदी हो चुके हैं।

विचारों के आदान-प्रदान की सामूहिक प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है। नए ज्ञान के सम्बन्ध में अधिकाधिक लोगों को जानकार होना प्रसार है। प्रसार का अर्थ होता है फैलान